International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 29-12-2022, Accepted: 15-01-2023, Published: 31-01-2023
Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 24-29

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक आर्थिक विचार

डॉ. रफअत अफ़रोज, संतोष कुमार
(राजनीति शास्त्र–विभाग), श्री सत्य साई विश्व विद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
डॉ. भीमराव अम्बेडकर, जिन्हें आज हम अनेक नामों से संबोधित करते हैं जैसे दलित नेता, समाज सुधारक, राजनीतिक विद्वान, न्यायविद, संविधान निर्माता आदि, एक उच्च कोटी अर्थशास्त्री थे, उनके द्वारा दिये गये आर्थिक विचार, जो कि उन्होंने उस समय दिये थे जब देश में सामाजिक आन्दोलन का वातावरण निर्मित था, आज भी प्रासंगिक हैं ।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी ने एक अर्थशास्त्री के रूप में प्रदान किया तीन पुस्तकें लिखी थी जैसे–ः भारतीय मुद्रा की समस्या, भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासन तथा वित्त और भारत में प्रांतीय वित्त का विकास आदि। इन सभी में उनके द्वारा दिये गये आर्थिक विचार न केवल उनकी उच्च स्तरीय बुद्धिमत्ता को दर्शाता हैं बल्कि एक पेशेवर अर्थशास्त्री के रूप में भी उनको एक विशेष पहचान प्रदान करता हैं। जहाँ एक तरफ वे भारतीय मुद्रा की समस्या के अन्तर्गत मुद्रा के मूल्य का निर्धारण करने के लिये उचित स्वर्णमान मानक की बात करते हैं तो दूसरी तरफ वे ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा सार्वजनिक राजस्व प्राप्त करने हेतु भारतीयों पर किये गये अत्याचारों की स्थिति को उजागर करता हैं। इस पुस्तक के अन्तर्गत वे कहते हैं कि सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से सेना पर अत्यधिक खर्च करना राष्ट्र के व्यापक हित में नही हैं और इस उद्देश्य हेतु लोगों से जबरन वित्त वसूल करना लोकतांत्रिक या संसदीय दृष्टिकोण से उचित नहीं हैं। उनकी तीसरी पुस्तक, जो कि उनके पी.एच.डी. काल के दौरान लिखी गयी थी, बिट्रिश भारत में सन 1833 से 1921 तक विकास केन्द्र के संबंधों का खुलासा करती हैं। इस पुस्तक में विशेष रूप से सार्वजनिक वित्त का उचित उपयोग करने पर बल देने की बात की गयी हैं। उनका कहना था कि सरकारों को जनता से संचित किया गया धन का इस्तेमाल नियमों, कानूनों व अधिनियमों के तहत विश्वसनीयता और मित्तव्ययिता से व्यय करना चाहिये ।

इसके अलावा उन्होंने भारतीय कृषि व्यवस्था की समस्या, मजदूरों की समस्याऐं, कराधान एवं जल संसाधन नीति, औद्योगिकरण, महिलाओं का आर्थिक उत्थान आदि पर दिये गये उनके विचार एक समाज सुधारक और आर्थिक दर्शनवाद के रूप में उनकी पहचान को इंगित करता हैं जो यह बताती हैं कि उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में अर्थशास्त्र को एक पेशेवर अर्थशास्त्री के रूप में कार्य करके समाज में एक विशेष दर्जा प्रदान किया है।

मूल शब्दः अर्थशास्त्री, सामाजिक, आर्थिक

भारत के मध्य प्रॉत (वर्तमान म.प्र.) के महू नामक सैनिक छावनी में 14 अप्रैल, 1891 में एक ऐसे व्यक्ति का जन्म हुआ था जो एक महान बुद्धिमान तथा समाज सुधारक थे, जिनका नाम डॉ. भीमराव अम्बेडकर था, पूर्व में उनका सरनाम अंबावडेकर था जिसे उनके शिक्षक महादेव अम्बेडकर ने बदलकर उपनाम अर्थात अम्बेडकर के स्कूल में दर्ज कराया था।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर न्यायविद, लेखक, राजनैतिक विद्वान, दलित नेता, भारतीय संविधान निर्माता, समाज सुधारक और बौद्ध दलित आंदोलन को प्रेरित करने वाले महान व्यक्ति थे। उन्होंने भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही सामाजिक असमानता (अस्पृश्यता) को समाप्त करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन करने के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था। उनका विश्वास था कि यदि समाज लाना है तो व्यक्ति के अन्तर्मन में साहस होना चाहिए और वह उसके दृढ संकल्प, कठोर परिश्रम मेहनत से उत्सर्जित होता है। यही कारण था कि वे भारतीय समाज में व्याप्त छुआछूत (अस्पृश्यता) जैसी सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने में सक्षम हुये थे।

डॉ. बी. आर अम्बेडकर एक समाज सुधारक एवं संविधान निर्माता के साथ–साथ ये एक उच्च स्तरीय बुद्धिमत्ता के धनी भी थे या हम यह कह सकते हैं कि उस समय के बुद्धिजीवियों में से एक थे मार्क्सवादी नेता पॉल बारन ने एक बुद्धिकार्यकर्ता और बुद्धिजीवी के बीच भेद उत्पन्न करके यह स्पष्ट किया था कि जो व्यक्ति अपने जीविकोपार्जन के लिये बुद्धि का उपयोग करता है तो उसे बुद्धिकार्यकर्ता तथा जो व्यक्ति सामाजिक परिवर्तन के लिये बुद्धि का प्रयोग करता है तो उसे बुद्धिजीवी कहते है। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर बुद्धि की परिभाषा को भलीभांति समझते थे इसलिये वे सामाजिक असमानताओं को जड़ से उखाड़ फेकने में सफल हो पाये थे।

उनकी सर्वश्रेष्ट बुद्धिक्षमता के कारण ही एंटोनियों ग्राम्स्की ने उन्हें कार्बनिक बुद्धिजीवी कहा है अर्थात जो एक सम्पूर्ण सामाजिक वर्ग के हितों पर प्रतिनिधित्व करता है।

अपनी बुद्धिक्षमता के आधार पर ही उन्होंने ब्रिटिश शासन काल के दौरान से ही भारत में व्याप्त सामाजिक राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करना प्रारंभ कर दिया था जिन्हें उन्होंने अपनी पुस्तकों के प्रकाशन के माध्यम से आम जनता के सामने प्रस्तुत किया था परन्तु भारतीय संविधान के पिता एवं दलित नेता के रूप में विख्यात होने के कारण उनके आर्थिक विचारों की अवहेलना की गयी थी जबकि डॉ बी आर अम्बेडकर जी ने अपना वास्तविक कैरियर एक अर्थशास्त्री के रूप में शुरू किया था जो आज भी प्रमुख आर्थिक बहसों में महत्वपूर्ण स्थान रखते है

उनके आर्थिक संबंधी विचार न केवल गरीबी समाप्त करने से संबंधित है बल्कि देश की आर्थिक विकास दर को उच्च करने के लिये औद्योगिकरण को महत्व देने से भी संबंधित है। उनका कहना था कि यदि हमें देश में व्याप्त आर्थिक समस्याओं एवं बेरोजगारी जैसी समस्याओं से निजात पाना है तो औद्योगिकरण सबसे उत्तम विकल्प सिद्ध हो सकता है।

आज हम जिस प्रकार से देश में बढ़ते हुये औद्योगिकरण को देख पा रहे हैं वह सब डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी की ही मेहनत का परिणाम है।

अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध कार्य को आरंभ करने से पहले कुछ उद्देश्यों का निर्धारण करना पड़ता है। इस शोध पत्र में, जो कि पूर्ण रूप से डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व और आर्थिक विचारों पर आधारित हैं, मैंने निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया है।

1. डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर जी के जीवन परिचय पर दृष्टि डालना।
2. डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर जी की शैक्षणिक यात्रा का अध्ययन करना।
3. डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर जी के आर्थिक विचारों का अध्ययन करना।

अनुसंधान पद्धति

यह शोध पत्र मूल रूप से डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर जी के आर्थिक विचारों पर आधारित हैं जिसमें मुख्य रूप से द्वितीयक समकों का उपयोग किया गया है जो कि विभिन्न कार के शोध पत्र, जर्नल, पुस्तक, वेबसाईट समाचार पत्रों आदि से संग्रहित किये गये हैं।

जीवन परिचय

जब हम डॉ बी आर अम्बेडकर जी के जीवन परिचय पर दृष्टि डालते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि शायद ही कोई और व्यक्ति होगा जिसने अपने जीवन काल में इतना कठिन संघर्ष सहन किया हो, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी का सम्पूर्ण जीवन कठिनाईयों एवं संघर्षों से भरा हुआ था। उनका जन्म "14 अप्रैल, 1891 में मध्यप्रदेश के इन्दौर जिले में स्थित सैनिक छावनी नाम से विख्यात शहर महू में हुआ था।" उनके पिता तथा माता का नाम क्रमशः रामजी मालोजी सकपाल, भीमाबाई था डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी उनकी 14वीं संतान थी। सामाजिक भेदभाव और सुविधाओं के अभाव में उनके केवल तीन बेटे बलराम, आनंदराव एवं भीमराव तथा दो बेटियाँ मंजुला व तुलसा ही इन कठिन हालातों में बच पायी थी।

डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी का परिवार मूल रूप मॉडगंड तलुका से थे जो कि मराठी पृष्ठभूमि से संबंधित है परिवार में पैदा हुये थे जिन्हें उस समय अछूत माना जाता था अर्थात सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़ी हुयी अवस्था में थे" उनके पिता ब्रिट्रिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना मुख्यालय जो कि महू में स्थित है, में सूबेदार के पद पर कार्यरत थे इसीलिये उनका आरंभिक निवास स्थान महू था तथा यही पर डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी का जन्म हुआ था।

डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी की स्कूली शिक्षा कठिनाईयों एवं मुश्किलों से भरी हुयी थी, उन्हें अध्ययन हेतु स्कूल के अन्दर जाने की अनुमति नहीं थी स्कूल के बाहर उनके द्वारा लायी गयी जूट की बोरी पर ही बैठकर शिक्षा अध्ययन की अनुमति थी। शिक्षकों द्वारा उनके अध्ययन पर कोई भी ध्यान नहीं दिया जाता था शिक्षा अध्ययन के दौरान यदि उन्हें पानी पीने की जरूरत होती थी तो एक उच्च जाति का व्यक्ति ऊँचाई से उस पानी को डालता था ताकि पानी या पानी के बर्तन से उसके हाथ न लग जाये क्योंकि उस समय अस्पृश्यता अपनी चरम सीमा पर थी। यह कार्य अक्सर स्कूल के चपरासी द्वारा युवा अम्बेडकर जी के लिये किया जाता था और यदि किसी दिन चपरासी उपस्थित नहीं होता था तो उन्हें बिना पानी पिये ही घर वापस जाना पड़ता था |

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी का जीवन परिचय में "सन 1894 वह दशक था जिसके अन्तर्गत उनके पिता जी अर्थात रामजी मालोजी सकपाल ब्रिट्रिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सैना से सेवानिवृत हो गये थे" तब उन्होंने यह निर्णय लिया कि वे अपने परिवार सहित सतारा चलें जायेंगे और वहाँ जाने के कुछ समय बाद ही उनकी मॉम का निधन हो गया था। ऐसी परिस्थितियों में बच्चों की देखभाल उनकी चाची ने की थी।

डॉ. अम्बेडकर जी का परिवार सतारा स्थानान्तरित होने के बाद उन्हें एक स्थानीय स्कूल में दाखिला दिया गया था लेकिन स्कूल के बदलाय ने भी युवा भीमराव के भाग्य को नहीं बदला अर्थात वहाँ पर भी ये अस्पृश्यता (धूआछूत) के शिकार हुये ये जहाँ भी जाते उन्हें छूआछूत का सामना करना पड़ता था। परिवार बुंबई चला गया था |

सन 1897 में बाबा साहेब अम्बेडकर जी परिवार– मुम्बई चला गया था।

सन 1906 में जब डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी 15 वर्ष के थे तब उनका विवाह एक नौ वर्ष की लड़की अर्थात रमाबाई के साथ कर दिया गया था |

सन 1907 का वर्ष वह वर्ष था जिसमें उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी जिसका सम्पूर्ण महार समाज ने जश्न मनाया था वे पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अछूत जाति में रहते हुये मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी।

सन 1912 में उनके पिता जी अर्थात रामजी मालोजी सकपाल का मुम्बई में निधन हो गया था।

इस प्रकार डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी का सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहा था उनके जीवन में सबसे बढ़ी बाधा या रुकावट अस्पृश्यता थी जिसने कभी भी उनका पीछा नहीं छोड़ा था जब ये अमेरिका से अध्ययन करने के बाद वापिस भारत आये तो उन्हें बडौदा के राजा के यहाँ रक्षा सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था लेकिन यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि यहाँ पर भी उनको सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ा था। यह उनके जीवन की कटु सच्चाई थी जिसे दे जीवन भर संघर्ष करते रहें तथा उसे कभी भी नहीं भुला पाये थे।

शिक्षा

डॉ बी आर अम्बेड़कर बचपन से ही प्रतिभा सम्पन्न थे उनका बौद्धिक स्तर अन्य छात्रों की तुलना में काफी उच्च था ये इतने अधिक बुद्धिमान थे कि उस समय के एक ब्राह्मण शिक्षक कृष्ण केशव अम्बेडकर युवा भीमराय की बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर उन्हें अपना प्रिय शिष्य बना लिया था जो कि उस समय में व्याप्त छुआछूत को ध्यान में रखते हुये एक बहुत बड़ी बात कही जा सकती है और आगे जाकर कृष्ण केशव अम्बेडकर ने उनका उपनाम अंबावडेकर से परिवर्तित करके अपने उपनाम अर्थात अम्बेडकर के रूप में परिवर्तित कर दिया था जो आज तक प्रचलित है।

डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी की प्रारंभिक या स्कूली शिक्षा का स्थल महू था। सन 1894 में जब उनके पिताजी सेवानिवृत्त होकर सतारा आ गये थे तो उन्हें सतारा के एक स्थानीय स्कूल में दाखिला दिया गया था। जहाँ उन्होंने माध्यमिक स्तर की शिक्षा पूर्ण की थी। सन 1897 में जब उनका परिवार मुम्बई स्थानांतरित हो गया "सन 1907 में था तो उन्होंने मुम्बई के प्रसिद्ध स्कूल एल्फिस्टन हाई स्कूल में प्रवेश लिया जहाँ उन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और अगले वर्ष उन्होंने एल्फिस्टन महाविद्यालय में प्रवेश लिया जो कि बॉम्बे विश्वविद्यालय से संबंद्ध था" जब उन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की तो उनके परिवार में खुशी का ठिकाना नहीं रहाण् परिवार से लेकर महार समुदाय तक सभी ने उनकी इस उपलब्धि के लिये खुशियों एवं जश्न मनाया व्यक्ति थे जिन्होंने अछूत रहते हुये हाईस्कूल की परीक्षा पास की थी।

सन 1912 में उन्होंने राजनीति विज्ञान एवं अर्थशास्त्र में बॉम्बे विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त कर बड़ौदा राज्य के महाराजा सियाजी गायकवाड के यहाँ नौकरी करना प्रारंभ कर दिया था। सन 1913 में लगभग 22 वर्ष की उम्र में सियाजी राव गायकवाड़

द्वारा तीन साल के लिये प्रदान की गयी छात्रवृत्ति (प्रतिमाह 11.50 स्टेलिंग) के तहत ये स्नातकोत्तर अध्ययन हेतु कोलंबिया विश्वविद्यालय, अमेरिका चले गये और यहाँ लिविंगस्टन हॉल में नवल भांठेना पारसी व्यक्ति जो कि आजीवन उनके दोस्त रहे, के साथ कमरों में बस गये थे "जून 1915 में उन्होंने समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास तथा मानवशास्त्र आदि विषयों में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा उन्होंने प्राचीन भारतीय वाणिज्य पर एक थीसिस (लघु शोध प्रबंध) भी प्रस्तुत किया था'' जिसमें प्राचीन भारत की वाणिज्य एवं वित्तीय संबंधी समस्या और समाधान का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इसके बाद उन्होंने एक और एम.ए. के लिये अपना दूसरा शोध "नेशनल डिविडेंड ऑफ इंडिया., हिसटोरिकल एण्ड एनालिटिकल स्टडी" प्रस्तुत किया था अंत में उन्हें सन 1927 में अर्थशास्त्र विषय में पी.एचडी. की उपाधि प्रदान की गयी थी।

डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी ने अपना तीसरा शोध लंदन छोड़ने के बाद भारत में मानव विज्ञानी अलेक्जेंडर गोल्डनवायजर द्वारा आयोजित एक शोध संगोष्टि से पहले कास्ट हिज मैकेनिज्म नामक पेपर स्तुत किया अक्टूबर 1916 में उन्होंने बार कॉर्स तथा लंदन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स में दाखिला लिया जहाँ पर उन्होंने पी. एच. डी. थीसिस ;शोध प्रबंधद्ध पर काम करना प्रारंभ किया था जून 1917 में बड़ौदा राज्य से छात्रवृत्ति समाप्त हो जाने के कारण यह भारत वापस लौट आये थे लेकिन उनके पुस्तक संग्रह को अलग से एक जर्मन जहाज द्वारा भेजा गया था जो कि डूब गया था ऐसी स्थिति में उन्हें पुन थीसिस ;शोध प्रबंधद्ध लिखने के लिये चार वर्ष का समय मिला और इस अवधि में वे थीसिस प्रस्तुत करने के बाद वे लंदन से वापस लौट आये थे उनका पी.एच.डी. थीसिस का विषय था The Evolution of Provinial Finance in British India

डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी द्वारा "सन 1923 में मास्टर डिग्री तथा The Problem of the Rupees:- Its Origin and Its Solution नामक पुस्तक प्रस्तुत की थी" (14) इसी वर्ष उन्होंने ष्अर्थशास्त्र में डी.एस.सी. पूर्ण की थी तथा उनके तीसरे व चौथे डॉक्रेट ;एल. एल.डीद्ध कोलंबिया 1952 और डी लिट उपाधि से सन 1953 में उस्मानिया विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया था

डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर अपने जीवन पर्यन्त सतत रूप से अध्ययन में संलग्न रहें। उन्होंने कभी भी अपने जीवन का एक मिनिट भी बर्बाद नहीं किया था इसीलिये वे शिक्षा के क्षेत्र में इतनी अधिक उपलब्धियों प्राप्त करने में सक्षम रहें। यही कारण था कि शैक्षिक उपलब्धियों के बल पर ये कट्टरवादी हिन्दू भारतीय सामाजिक संरचना में व्याप्त विषमताओं को दूर या समाप्त करने में सफल हुये थे।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी के आर्थिक विचार

जब हम डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी के आर्थिक विचारों पर दृष्टि डालते हैं तो हमें उनके विचारों में आर्थिक दृष्टि से एक मजबूत राष्ट्रवाद की स्पष्ट झलक दिखायी देती हैं। उन्होंने अपने विचार उस समय प्रस्तुत किये थे जब देश में सामाजिक आंदोलन का वातावरण संचालित था। उन्होंने अपने जीवन में रूसी क्रांति, द्वितीय विश्व युद्ध और भारत के औपनिवेशिक विरोधी संघर्ष जैसी युगान्तरकारी घटनाओं को देखा था। सन 1930 की महामंदी भी उन्हीं के जीवन काल की एक महत्वपूर्ण घटना थी जिसने किस प्रकार सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को तहस. नहस कर दिया था। इन सभी घटनाओं ने डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी को ऐसे आर्थिक घटकों को प्रोत्साहित करने के लिये प्रेरित किया था जिनसे एक राष्ट्र का मजबूत आधार स्तंभ खड़ा होता है इसलिये उनके विचारों में कृषि, औद्योगिकरण, भारतीय मुद्रा की समस्याए भूमि सुधार मानव पूंजी की अवधारणा, श्रम समस्या, महिलाओं का आर्थिक उत्थान जाति व्यवस्था का अर्थशास्त्र, कराधान नीति तथा जल संसाधन नीति आदि आर्थिक घटकों का वर्णन मिलता है। आर्थिक समस्याओं के दृष्टिकोण से डॉ. बी. आर अम्बेडकर न केवल एक अर्थशास्त्री थे बल्कि ये एक वित्तीय विशेषज्ञ भी थे डॉ. अंबीराजन (एक प्रख्यात प्रोफेसर) ने डॉ अम्बेडकर जी के बारे में कहा था कि डॉ. बी. आर. अम्बेडकर उन पहले भारतीयों में से एक थे जिन्होंने अर्थशास्त्र में औपचारिक शिक्षा पायी और एक पेशेवर की तरह ज्ञान की इस शाखा का अध्ययन तथा उपयोग किया था।" उन्होंने अपने विचारों में आर्थिक समस्याओं के साथ–साथ विभिन्न वित्तीय संस्थाओं के निर्माण पर भी विशेष जोर दिया था। आज हमारे सामने केन्द्रीय बैंक के रूप में जो भारतीय रिजर्व बैंक अस्तित्व में हैं वह उन्हीं के वित्तीय विचारों की देन है इसीलिये प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रामचन्द्र गुहा ने डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के बारे में कहा था कि ष्उनकी विरासत विशेष हितों के अनुकूल है, वह एक महान विद्वान, संस्थागत का निर्माणकर्ता तथा अर्थशास्त्री थे। प्रसिद्ध भारतीय मूल के अर्थशास्त्री तथा नोबल पुरस्कार विजेता प्राण (डॉ.) अमर्त्य सेन ने तो यहाँ तक कह दिया था कि "डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मेरे अर्थशास्त्र के पिता है।" उन्होंने कहा कि ये न केवल दलित, पिछड़े और गरीब लोगों का उत्थान करने वाले महान विद्वान थे बल्कि ये आज जो कुछ है यह उससे कहीं अधिक के हकदार भी है हालाँकि ये अपने देश में जाति व्यवस्था के कारण एक विवादस्पदा व्यक्ति थे लेकिन फिर भी अर्थशास्त्र में उनका योगदान अद्वितीय रहा हैं और इसके लिये उन्हें हमेशा याद किया जायेगा। .

डॉ. बी आर अम्बेडकर जी इसलिये भी एक महान अर्थशास्त्री के रूप में माने जाते हैं क्योंकि ये उस समय के विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्रीयों जैसे एडविन सैलिगमेन, जॉन डेवी ऐलेक्जेंडर गोल्डनवायजर आदि के समकालीन थे या यह कहा जा सकता है कि वे इन अर्थशास्त्रीयों से प्रभावित थे "एडविन सैलिगमैन सार्वजनिक वित्त के सबसे अग्रणी अर्थशास्त्री थे, डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी ने उनके मार्गदर्शन में कोलंबिया शोध प्रबंध प्रस्तुत किया था जो विशेष रूप से राज्य तथा केन्द्र सरकारों के बीच वित्तीय संबंधों पर आधारित था" जबकि जॉन डेवी एक उत्कृष्ट अमेरिकी दार्शनिक थे जो कोलंबिया विश्व विद्यालय में उनके शिक्षकों में से एक थे "एलेक्जेंडर गोल्डनवायजर एक ऐसे अर्थशास्त्री थे जो समाज में व्याप्त भेदभाव के सख्त खिलाफ थे इसीलिये उन्होंने डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी को भारत की जाति व्यवस्था पर शोध प्रबंध हेतु प्रोत्साहित किया था जो बाद में सन 1917 में एंटीक्यारी में प्रकाशित हुआ था। "इन्हीं महान अर्थशास्त्रीयों के विचारों से प्रभावित होकर या उनके निर्देशानुसार कार्य करने के कारण ही डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर एक महान तथा विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री के रूप में उभरकर आये थे।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में अर्थशास्त्र से संबंधित तीन पुस्तकें लिखी थी जो कि निम्नलिखित हैं।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक, आर्थिक विचार

1. Problems of Rupees:- Its Origin and Its Solution.
2. Administration and Finance of East India Company.
3. The Evolution of Provincial Finance in British India. (19)

भारतीय रुपये की समस्या: उत्पत्ति और समाधान: डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी द्वारा भारतीय रुपये की समस्या के संबंध में सन 1923 में प्रॉब्लम ऑफ रूपीस इटस ओरिजिन तथा इटस सोल्यूशन नामक पुस्तक लिखी थी'' द्यजिसमें वर्तमान भारतीय मुद्रा प्रणाली की समस्या का वर्णन किया गया है। यह समस्या उस समय की है जब भारत में ब्रिट्रिश ईस्ट इंडिया का शासन अस्तित्व में था। इस पुस्तक का यदि हम गहराई से अध्ययन करें तो हमें यह ज्ञात होता है कि इसमें विशेष रूप से मुद्रा के मूल्य की स्थिरता पर विशेष रूप से बल दिया गया है। यह उसी प्रकार से है जिस प्रकार से हम अर्थशास्त्र में मुद्रास्फीति नामक

आर्थिक घटना के अन्तर्गत मुद्रा के मूल्य की स्थिरता की बात करते हैं। मुद्रास्फीति में आर्थिक नीति निर्मताओं और अर्थशास्त्रीयों द्वारा इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि मुद्रा का मूल्य स्थिर रहें और इस समस्या के समाधान हेतु देश में उत्पादन की मात्रा बढ़ाने हेतु सक्रिय कदम उठाये जाते हैं किन्तु इस पुस्तक में डॉ. बी आर अम्बेडकर जी के द्वारा स्वर्ण मानक के संदर्भ में मुद्रा के मूल्य के स्थिर रखने पर बल दिया गया है। उनके अनुसार स्वर्ण प्रतिमान वह मानक होता है जिसके अन्तर्गत मुद्रा के मूल्य को परिवर्तित किया जाता है। उन्होंने तर्क दिया कि सोने के विनिमय मानक में स्थिरता नहीं है और भारत जैसा विकासशील देश स्वर्ण विनिमय मानकों को बर्दाश्त नहीं कर सकता क्योंकि इसके अन्तर्गत मुद्रा की मात्रा तथा मुद्रा के मूल्य में वृद्धि की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

डॉ. बी आर अम्बेडकर जी ने ऑकड़ों एवं कारणों के आधार पर यह साबित किया कि स्वर्ण मानक के कारण कैसे व किस प्रकार के भारतीय रुपये ने अपनी क्रयशक्ति को खो दिया है। इसके लिये उन्होंने सुझाव दिया कि सरकार द्वारा घाटे को विनियमित किया जाना चाहिये एवं धन का एक व्यवस्थित प्रवाह होना चाहिये। उन्होंने कहा कि विनिमय दर की तुलना में मुद्रा की मूल्य स्थिरता पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। यदि हम इस समस्या के प्रारंभ पर दृष्टि डालें तो यह माना जाता है कि यह आर्थिक घटना 19वीं शताब्दी में प्रारंभ हुयी थी "सन 1841 में भारत में सोने के सिक्कों का उपयोग किया जाता था तथा 1891 से पूर्व चाँदी के सिक्कों का भी उपयोग होने लगा था'' | इसमें चोंदी के सिक्के का मूल्य उसमें उपलब्ध चांदी के द्रव्यमान से आंका जाता था। इस प्रकार एक स्वर्ण मुद्रा का मूल्य 15 चांदी के सिक्कों के बराबर था। बाद में भारतीय मुद्रा की कीमत को सोने की कीमत के साथ एक बैध मुद्रा के रूप में जोड़ दिया ष्सन 1853 में अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में स्वर्ण भंडार मिलने से सोने के उत्पादन की मात्रा में वृद्धि हुयी द्य जिससे सोने की मुद्रा का प्रचलन बढ़ने लगा लगभग उसी समय भूमि के अन्दर से चाँदी के भंडार मिलने से इसके उत्पादन में भी वृद्धि हुयी लेकिन भारत में सोने के उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि न होने के कारण भारतीय रजत मुद्रा का निरंतर अवमूल्यन होने लगा अर्थात भारतीय मुद्रा की कीमत तेजी से गिरने लगी जिसके कारण भारतीय अर्थव्यवस्था बुरी तरह से अस्त.व्यस्त हो गयी थी ष्सन 1890 में भारत सरकार ने स्वर्ण मुद्रा जारी करने की अनुमति दे दी परन्तु चाँदी के सिक्के भी प्रचलन में बने रहे थे ;16द्ध इस हेतु पर्याप्त मात्रा में भारतीय मुद्रा छापने के लिये सन 1906 में स्वर्ण प्रतिमान की स्थापना की गयी थी परन्तु 1916 में स्वर्ण प्रतिमान बिखर गया और फिर से भारतीय मुद्रा की कीमत चाँदी से जोड़ दी गई थी। इसका कारण यह था कि भारतीय मुद्रा की विनिमय दर का निर्धारण करने वाला सोना भारत के स्थान पर लंदन में रखा गया था जिससे स्वर्ण प्रतिमान का उचित तरीके से हिसाब.किताब न रखने की वजय से भारतीय मुद्रा का मूल्य गिर गया था। उस समय के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं सिद्धांतकार जॉन मेनार्ड केन्स स्वर्ण प्रतिमान के पक्ष में थे जबकि डॉ. बी. आर अम्बेडकर आर जॉन मेनार्ड केन्स के पक्ष में नहीं थे। उनका कहना था कि एक आम आदमी को प्रतिदिन रोजमर्रा की वस्तुओं को क्रय करना ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं न कि कीमती धातु की, डॉ. अम्बेडकर स्वर्ण प्रतिमान के पक्ष में तो थे लेकिन यह उसके लिये मुद्रा प्रबंधन को आवश्यक मानते थे उनका कहना था कि उपभोग्य सामग्री के संदर्भ में रूपये की कीमत स्थिर रहनी चाहिये। आम लोगों के लिये कीमती धातुओं की कीमत का उतना महत्व नहीं है जितना कि उनके रोजमरों के इस्तेमाल की वस्तुओं और सेवाओं की कीमत का है।

भारतीय मुद्रा की समस्या के संदर्भ में स्वर्ण प्रतिमान को लेकर डॉ. अम्बेडकर के विचार सराहनीय रहे हैं क्योंकि उनके द्वारा दिया गया प्रबंधित और विनियमित स्वर्ण प्रतिमान का उपयोग करने के कारण ही भारतीय रिजर्ब बैंक जैसी वित्तीय संस्थानों की स्थापना हुयी थी जो कि आज भी भारतीय वित्तीय व्यवस्था को उचित रूप से संचालित करने में अपनी अहम भूमिका अदा कर रही है।

भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासन और वित्त

1792 से 1858 के दौरान ईस्ट इंडिया प्रदान करती है। इस पुस्तक के डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी द्वारा लिखी गयी यह पुस्तक सन कंपनी के प्रशासन तथा वित्त में परिवर्तन की एक ऐतिहासिक समी अन्तर्गत डॉ. अम्बेडकर जी द्वारा यह दर्शाया गया है कि कैसे व किस प्रकार सार्वजनिक वित्त हेतु ब्रिट्रिश शासकों द्वारा भारतीय लोगों पर अत्याचार किया गया था। उनका कहना था कि सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से अर्थात सेना पर अत्यधिक खर्च करना राष्ट्र के व्यापक हित में नहीं है और इस उद्देश्य हेतु लोगों से जबरन वित्त वसूल करना लोकतांत्रिक या संसदीय के दृ ष्टिकोण से उचित नहीं है।

डॉ. अम्बेडकर जी कहते है कि ब्रिट्रिश सरकार द्वारा अपने कुल बजट का 45 से 65 तक सैन्य शक्ति पर व्यय करती है और इस हेतु ब्रिट्रिश सरकार भारत में भूमि करों में 54 की वृद्धि करती है जबकि इंग्लैण्ड में यह कर की राशि मात्र 10 तक है।यह एक प्रकार से ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीयों पर किया गया अत्याचार है अर्थात लोकतांत्रिक देश की दृष्टि से उचित नहीं हैं उनका कहना था कि सरकार को जनता से प्राप्त की गयी राशि का उपयोग विकास कार्यों में खर्च करना चाहिये न कि सेना पर सेना पर किया गया अत्यधिक व्यय किसी भी स्थिति में लोकतांत्रिक नहीं है।

भारत में प्रांतीय वित्त का विकास

यह पुस्तक डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी द्वारा उनके पीण् एचण् डीण् काल के दौरान प्रस्तुत किया गया शोध "यह ब्रिट्रिश भारत में सन 1833 से 1921 तक विकास केन्द्र के संबंधों का खुलासा करता है। इस पुस्तक में विशेष रूप से सार्वजनिक वित्त का उचित उपयोग करने पर बल दिया गया है। उनका कहना था कि सरकारों को जनता से संबंधित धन का इस्तेमाल न केवल नियमों कानूनों व अधिनियमों के अनुकूल करना चाहिये बल्कि यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि सार्वजनिक प्राधिकारी धन के व्यय में विश्वसनीयता, मित्तव्ययिता व बुद्धिमत्ता से भी काम ले जनता से प्राप्त किये गये धन के एक–एक रुपये का हिसाब–किताब रखना चाहिये ब्रिटिश भारत के प्रांतीय वित्त विकास के अन्तर्गत उन्होंने तीन प्रकार के बजट जैसे असाइमैन्ट द्वारा बजट आवंटित राजस्व द्वारा बजट तथा साझा राजस्व द्वारा बजट आदि तीनों बजटों पर चर्चा करते हैं और यह धारणा व्यक्त करते है कि इन तीनों में सामंजस्य स्थापित करने वाली शक्ति होनी चाहिये डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी ने यह स्पष्ट किया कि सामूहिक उत्तरदायित्व ही सामंजस्य स्थापित करने वाली शक्ति है। उनके अनुसार – विभाजित उत्तरदायित्व कार्यों का विभाजन शक्तियों का बटवारा आदि से कभी शासन की उत्तम व्यवस्था का निर्माण नहीं हो सकता है और जहाँ शासन प्रणाली अच्छी नहीं होगी यहाँ वित्त व्यवस्था अच्छी होनी की आशा नहीं की जा सकती है। डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी के इस कथन के कारण ही विभिन्न प्रकार की सरकारों अर्थात केन्द्र, राज्य तथा स्थानीय सरकारों के बीच वित्त का विभाजन करने के लिये वित्त आयोग की स्थापना की गयी थी।

स्माल होल्डिंग्स इन इंडिया एण्ड देयर रेमेडीज तथा उद्योगों का राष्ट्रीयकरण

यह शोध प्रबंध जो कि पूर्णरूप से भारतीय कृषि व्यवस्था और उसके विखण्डन पर आधारित था, "डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी

द्वारा सन 1918 में लिखा गया था इसके अन्तर्गत उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भारतीय कृषि व्यवस्था में कई समस्याऐं हैं जैसे कृषि भूमि का कुछ लोगों के हाथों में केन्द्रित होना, छोटे जोतों की समस्या, कृषि कार्य में अधिक लोगों का संलग्न होना आदि। दरअसल ये इन समस्याओं के माध्यम से भारतीय कृषि व्यवस्था में सदियों से चली आ रही जमीदारी रैयतवाड़ी एवं काश्तकारी जैसी प्रथाओं को समाप्त करना चाहते थे।

डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी का कहना था कि भारतीय कृषि में इन समस्याओं के कारण वाँछित परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं जैसे कृषि भूमि के अनुपात में उत्पादन में वृद्धि पर्याप्त आय तथा कृषि में संलग्न लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि आदि। डॉ. अम्बेडकर जी के अनुसार– "कृषि की उत्पादकता न केवल भूमि की जोत के आकार से संबंधित है बल्कि अन्य कारकों जैसे पूँजी, श्रम व अन्य पूँजीगत माल से भी संबंधित है इसलिये यदि पूँजी या श्रम पर्याप्त मात्रा में और गुणवत्ता में उपलब्ध नहीं है तो यह कृषि भूमि एक अनुत्पादक भी बन सकती है दूसरी ओर छोटे जोतों की भूमि उत्पादक हो सकती है यदि ये संसाधन भरपूर मात्रा में उपलब्ध हो ये छोटे जोतें की समस्या के समाधान हेतु पूँजी तथा श्रम के अलावा कृषि मशीनों को भी महत्वपूर्ण मानते थे किन्तु उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मशीने छोटे जोतों की तुलना में बढ़े कृषि भू.खण्डों में यह अधिक कारगर सिद्ध हो सकती हैं। मशीनों के इस्तेमाल से आय तो उत्पन्न होगी लेकिन वह कम होगी इसलिये ये मानते थे कि कृषि भूखण्डों के

आकार का विस्तार किया जाना चाहिये ताकि किसानों को अपने जीविकोपार्जन हेतु पर्याप्त मात्रा में आय प्राप्त हो सके। स्माल होल्डिग्स इन इंडिया एण्ड देयर रेमेडीज में – डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी लिखते हैं कि "पूँजी वस्तु है और श्रमिक व्यक्ति पूँजी केवल होती हैए श्रमिक जीते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि पूँजी का यदि कोई उपयोग न किया जाता तो उससे कोई आमदनी नहीं होगी परन्तु उस पर कोई खर्च भी नहीं करना पड़ता, किन्तु श्रमिक चाहे वह कुछ कमाये या नहीं, उसे जीवित रहने के लिये स्वयं पर खर्च करना पड़ता है और यदि वह खर्च उत्पादन से नहीं निकाल पाता है तो कृषि भूमि का आकार उसके लिये व्यर्थ है। दरअसल ये छोटी जोतों को एक सामाजिक बुराई समझते थे जो न केवल उत्पादन की दृष्टि से खराब हैं बल्कि कृषकों के जीवन यापन के दृष्टिकोण से भी व्यर्थ।

डॉ. बी आर अम्बेडकर जी इसमें छोटी जोतों के अलावा कृषि कार्य में संलग्न अकार्यशील श्रम को भी एक समस्या के रूप में प्रकट किया था। वे कहते थे कि कृषि कार्य में आवश्यकता से अधिक लोगों का संलग्न होना एक प्रकार से अदृश्य (छिपी) बेरोजगारी का रूप है जो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं हैं। इसके लिये उन्होंने अपने इस शोध प्रबंध में औद्योगिकरण को अपनाने पर बल दिया था। वे कहते थे कि औद्योगिकरण से अकार्यशील श्रम, कृषि भूमि पर जनता का दवाब और अतिशेष उत्पादन का अभाव आदि समस्याऐं एक झटके में समाप्त हो जायेंगी क्योंकि औद्योगिकरण रोजगार प्रदान करने के साथ.साथ बड़े पैमाने पर उपभोग वस्तुओं की मात्रा को भी बढ़ाने में सहयोग प्रदान करता है किन्तु वे इसके लिये उद्योगों को राष्ट्रीयकृत करने के पक्ष में थे अर्थात उद्योगों की स्थापना सरकार के अधिपत्य में किया जाना चाहिये क्योंकि यदि स्वतंत्र रूप से उद्योगों का गठन किया जायेगा तो कई तरह की समस्याएँ जैसे श्रमिकों का शोषण कार्य के घण्टे न्यूनतम मजदूरी का निर्धारण, पूँजी व धन का केन्द्रीयकरण आदि इसलिये उद्योगों की स्थापना हेतु नियम व अधिनियम गठित किये जायें जिससे इस प्रकार की समस्याओं का समाधान संभव हो सकें।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के अनुसार लोकतंत्र का अर्थ था ष्अधिक उपकरण, अधिक औद्योगिकरण और उच्च आर्थिक लाभ, उन्होंने गाँव की व्यवस्था पर जमकर हमला किया तथा लोगों को गाँवों को छोड़कर शहर में बसने के लिये आहवान किया था। वह गाँव की सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था, जो कि ऊँच–नीच या अस्पृश्यता पर आधारित थी, समापत करना चाहते थे।" जबकि गाँधी गाँव के पक्ष में थे, उनका कहना था कि यदि गाँव नष्ट होते हैं तो भारत भी नष्ट हो जायेगा लेकिन डॉ बी आर अम्बेडकर गाँधी जी के इन विचारों से सहमत नहीं थे क्योंकि ये यह मानते थे कि सामाजिक असमानता और अस्पृश्यता का मूल जन्म स्थान गाँव ही हैं। यदि हमें इन समस्याओं तथा सामाजिक भेदभावों की जड़ से उखाड़ फेंकना है तो शहर की ओर पलायन करना ही होगा तभी आम लोगों के जीवन स्तर से उच्च बनाया जा सकता है।

महिलाओं का आर्थिक उत्थान तथा श्रम समस्या

डॉ. बी आर अम्बेडकर जी ने अपने आर्थिक विचारों में महिलाओं के आर्थिक उत्थान को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया था। उनका कहना था कि महिलाऐं जो कि सदियों से पुरुषों द्वारा उपेक्षित एवं दयनीय स्थिति में अपना जीवन यापन कर रही हैण् उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति को उच्च करना अति आवश्यक हैं क्योंकि किसी भी देश में महिलाओं के बिना राष्ट्र का आर्थिक उत्थान असंभव है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारत में महिलाओं की खराब स्थिति के कारण ही राष्ट्र की आर्थिक प्रगति बाधित हो रही है इसलिये महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधान लाने एवं उन्हें देश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिये उनका आर्थिक उत्थान आवश्यक है। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के अनुसार– मैं उस प्रगति की डिग्री के द्वारा समुदाय की प्रगति को मापता हूँ जिसे महिलाओं ने प्राप्त किया।

डॉ. बी. आर अम्बेडकर एक समाज सुधारक की दिशा में एक महत्वपूर्ण मानवतावादी

दृष्टिकोण भी रखते थे इसीलिये उन्होंने मिल या कारखानों में कार्य करने वाले श्रमिकों के कल्याण हेतु भी अपने विचार व्यक्त किये थे। वे ट्रेड यूनियन ऑदोलन तथा पूँजीवाद के खिलाफ हड़ताल के समर्थक थे। वे चाहते थे औद्योगिक प्रबंधन में मजदूरों की भागीदारी भी होनी चाहिये जिससे उनके साथ किसी भी प्रकार का शोषण न हो सके, उन्होंने मजदूरों के आर्थिक कल्याण हेतु संविधान में कार्य के घण्टे अवकाश, न्यूनतम मजदूरी तथा स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं के लिये स्पष्ट निर्देश एवं अधिनियम जारी किये थे ताकि किसी भी श्रमिक का मिल मालिकों द्वारा शोषण न हो सके। उनके अनुसार "यदि औद्योगिक प्रबंध सामाजिक न्याय पर आधारित होता है तो औद्योगिक शाँती कायम रह सकती है। इसके लिये उन्होंने केन्द्र सरकार में अनुसूचित जाति ध् जनजाति के लोगों के लिये 5 से 6 के आरक्षण की व्यवस्था की थी" | जिससे देश में एक न्यायपूर्ण औद्योगिक प्रबंध कायम हो सके। कि ।

कराधान एवं जल संसाधन नीति

डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी ने सन 1936 में स्वतंत्र मजदूर पार्टी के घोषण पत्र में अपने आर्थिक विचारों के अन्तर्गत कराधान पर अपने विचार प्रस्तुत किये थे | ये विशेष रूप से ऐसे करो के विरोध में थे जिनका प्रभाव समाज के गरीब लोगो पर पड़ता थाए उनका कहना था कि किसी भी देश की सरकार द्वारा कर इस प्रकार लगाये जाने चाहिये। जिससे कि करदाताओं को सुविधा हो, इसके लिये उन्होंने एक शब्द दिया और वह था "कराधान क्षमता" अर्थात एक उत्तम कर वह कर होता है जो कि लोगों की आर्थिक क्षमता के अनुसार लगाया गया हो, उन्होंने कहा कि– ‘‘कर को एक निश्चित सीमा तक छूट के साथ प्रगतिशील होना चाहिये, विभिन्न करों में से भूमि कर (कृषि भूमि पर लगने वाला कर) अधिक लचीला एवं आसान होना चाहिये जिससे कृषि

उत्पादन पर किसी भी प्रकार का प्रभाव न पड़े तथा अन्य लोगों के साथ. साथ कृषकों का जीवन स्तर भी उच्च बना रहे आदि।''
डॉ. बी. आर अम्बेडकर उस समय बिजली एवं सिंचाई परियोजना समिति के अध्यक्ष थे जिसका मुख्य पानी तथा बिजली व्यवस्था हेतु नीतियों बनाना था।
डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी ने अपने सतत परिश्रम तथा बुद्धिमत्ता के आधार पर अनेक नदी घाटी परियोजनाओं जैसे. "दामोदर घाटी परियोजना, हीराकुण्ड नदी परियोजना, सोन नदी'' जैसी सभी परियोजनाओं का निर्माण किया था | आज हम लोग जिस प्रकार से बिजली और पानी की सुविधाओं का लाभ प्राप्त कर रहे हैं यह सब उनके अथक परिश्रम का ही परिणाम हैं।

निष्कर्ष

डॉ. बी. आर अम्बेडकर एक ऐसे समाज सुधारक, न्यायविद संविधान निर्मता और दलित नेता थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज में व्याप्त भेदभाव एवं अस्पृश्यता को समाप्त करने में लगा दिया था इसलिये उनकी पहचान सम्पूर्ण भारतीय समाज में एक विशेष जातिगत पक्ष के कारण छुआछूत को मिटाने तक ही सीमित रह गयी है लेकिन यह उनके साथ किया गया एक प्रकार का अन्याय है क्योंकि डॉ. बी. आर. अम्बेडकर न केवल एक समाज सुधारक व सामाजिक दार्शनिक थे बल्कि वे एक विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री भी थे जिनका लोहा उनके समकालीन अर्थशास्त्री जैसे. जे. एम केन्स जॉन डेवी सेलिगमैन तथा एलेक्जेंडर गोल्डनवाजर आदि भी मानते थे।
जब हम डॉ. बी आर अम्बेडकर जी के आर्थिक विचारों पर दृष्टि डालते हैं तो यह पता चलता है कि वे आर्थिक क्षेत्र में एक प्रकार से भविष्य वक्ता थे क्योंकि उन्होंने उस समय जो आर्थिक सिद्धांत दिये थे वो आज भी प्रासंगिक हैं चाहे वह कृषि के संबंध में हो या फिर भारतीय मुद्रा प्रॉतीय वित्त का विकास कराधान नीति, महिलाओं का आर्थिक उत्थान आदि। कृषि क्षेत्र में ये एक तरफ भूमि सुधार की बात करते हैं तो दूसरी तरफ ये भारतीय मुद्रा के संबंध में उचित स्वर्ण प्रतिमान की बात पर जोर देते हैं ताकि भारतीय मुद्रा का मूल्य स्थिर रहे, प्रॉतीय वित्त के विकास में सार्वजनिक राजस्व के बटबारे के लिये उनके द्वारा दिया गया वित्त आयोग का विचार सराहनीय रहा है क्योंकि यह केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच सार्वजनिक राजस्व का उचित विभाजन करने में क्षम रहा है।
कराधान पर उनके विचार प्रशंसा के पात्र रहे हैं क्योंकि वर्तमान में जो कर नीति भारत में संचालित हैं यह उन्हीं के आर्थिक विचारों पर आधारित हैं। इतना ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों जैसे–श्रम समस्या, जल संसाधन नीति, महिलाओं का आर्थिक उत्थान आदि सभी में उनके विचार एक उच्च कोटि के अर्थशास्त्री या आर्थिक दार्शनिक का परिचय देते हैं।
इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि डॉ. बी. आर. अम्बेडकर एक उच्च कोटि के अर्थशास्त्री थे।

संदर्भ सूची

1. शुक्ल, दश्स्थ नारायण शरत, के महान प्रेरणा स्रोत, शिवम प्रकाशन, इलाहावाद–1997
2. शहारे, म.ला. नलिनी अनिल, डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर के तीन गुरू महात्मा बुद्व,
3. महात्मा कबीर, एवं महात्मा फूले, संग्मेंट बुक्स, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली 1994
4. शास्त्री, शंकरानन्द, युगपुरूष बाबा साहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर (जीवन संधश एवं राष्ट्र सेवायें) अमृत बुक कम्पनी, कनाट सर्कल नई दिल्ली, 1990
5. त्रिपाठी सत्येन्द्र, द्विवेदी कृष्ण दत्त, शरतीय राष्ट्रवाद स्वरूप और विकास, विश्व विद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, 1990
6. वर्मा, ओम प्रकाश, आधुनिक
7. भारतीय समाज की सामाजिक सांस्कृतिक पुष्टिभूमि यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1998
8. सिंह, रेणुका, शुद्ध मन की ओर, प्रशत प्रकाशन, दिल्ली, 2000
9. एस मूर्ति, सामाजिक दर्शन, (बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर के चार सामाजिक
10. क्रांन्तिकारी का अविकल अनुवाद) कल्चरल पब्लिशर, अमीनाबाद लखनऊ –19897
11. सत्यप्रेमी, पुरुषोत्तम, दलित साहित्य और सामाजिक न्याय, समता प्रकाशन नई दिल्ली, 1997